ISSN 2347-4041

एषमां विश्ववारां तां संस्कृतिं स्वयुगानुगाम्। संस्कारचेतना धत्ते वसुधैव कुटुम्बकम्॥

वर्ष-07
अंक-07
मार्च, 2018
UGC NO. 41232

साहित्य, शिक्षा,
वाणिज्य, मानविकी,
विज्ञान एवं सभी विषयों की

संस्कार चेतना

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका (मासिक)

INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक
डॉ. विजय दत्त शर्मा, पूर्व निदेशक,
हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

संपादक
डॉ. केवल कृष्ण

"उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्"

शोध चेतना अकादमी
'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

✓ V.S. Naipaul From House to Home: A State of Realisation — 82-85
Vinita

✓ The Inflow of FDI in India: Problems — 86-89
Dr. Vikramjit Singh

✓ Deconstructions in Samuel Beckett's Radio play The Old Tune — 90-93
Vinita

✓ भवभूति के रूपकों में नारी विमर्श — 94-99
डॉ. माधवी शर्मा, सुमन बड़सरा

✓ ਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸੰਧੂ ਰਚਿਤ ਨਾਵਲ: ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਨਿਮਨ ਕਿਸਾਨੀ ਦਾ ਬਿੰਬ — 100-102
ਨਾਇਬ ਸਿੰਘ

✓ Study of Impact of Environmental Degradation on Human Life — 103-106
Sonia

✓ Social exclusion in India: A multidimensional approach to address the vulnerable status of children — 107-112
Minakshi Rana

✓ Gender Sensitization — 113-114
Rohini Devi Sharma

✓ Emerging Trends of Indian Foreign Policy: A Critical Analysis — 115-118
Dr. Gobinda Chandra Sethi

✓ 1857 Revisited : The Narrative of Mutiny in Punjab and It's Subjugation — 119-122
Dr Surinder Kaur

✓ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਵਲ ਅਤੇ ਦਲਿਤ ਚੇਤਨਾ — 123-125
ਕਮਲਜੀਤ ਕੌਰ

✓ Colour; an Emotional factor in Designing — 126-130
Mandeep kaur

✓ Syncretism : The Changing Meaning of The Term — 131-133
Garima

✓ लखमीचन्द के सांगों में वर्णित विषय — 134-138
Dr. Manju Sharma

✓ इक्कीसवीं सदी में पंजाब के हिन्दी कवि डॉ. बलदेव वंशी — 139-142
प्रो. सुनीता

✓ वाल्मीकि रामायण में दाम्पत्य सम्बन्धों की प्रगाढ़ता — 143-146
डॉ. प्रतिभा कुमारी

✓ भारतीय संस्कृति के उन्नायक पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' — 147-150
डॉ. मुकेश कुमार

✓ इक्कीसवीं सदी में स्वामी विवेकानन्द के सन्देश की प्रासंगिकता — 151-155
डॉ आराधना

✓ इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में दलित विमर्श — 156-161
डॉ. रमेश कुमार

✓ "कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में पंजाबी संस्कृति" — 162-165
डॉ. अनिता कालिया

Scanned with OKEN Scanner

संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका
ISSN : 2347-4041
Impact Factor 2.003
वर्ष 7, अंक 7, मार्च 2018

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में पंजाबी संस्कृति

डॉ. अनिता कालिया
एसोसिऐट प्रोफ़ेसर
गुरू नानक गर्ल्ज़ कॉलेज
यमुनानगर (हरियाणा)

हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में कृष्णा सोबती का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में पंजाब की संस्कृति को विशेष रूप से उजागर किया है। पंजाब (पाकिस्तान) की धरती पर जन्मी, पली और बड़ी होने के कारण उनके रंग-रेशे में पंजाब की संस्कृति के रंग बहुत गहरे हैं। ग्रामीण जीवन से उन्हें विशेष लगाव रहा है। अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए वह कहती हैं - ''सुबह-सुबह खेत जाते। दरिया नहाते। पानी भरे घड़े उठाने की होड़ लगती। कांसी के कटोरों में दूध पीते। रोटी पर मक्खन और बूरा खाते। चरखा कातते। घोड़ा दौड़ाते। अपने साथियों को शहर के गाने सुनाते। उनसे टप्पे किस्से सुन-सुन याद करते।''[1]

इस प्रकार बचपन में बिताए गाँव के जीवन को वह भुला नहीं पाती। उनके उपन्यास 'ज़िन्दगीनामा', 'डार से बिछुड़ी' और 'मित्रो मरजानी' में पंजाबी संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। समाज के किसी भी समुदाय अथवा जाति को जानने के लिए उसकी संस्कृति को जानना आवश्यक होता है। वहां रहने वाले लोगों का रहन-सहन खानपान वेशभूषा, तीज त्योहार, मेले, उत्सव एवं वहां की भाषा के द्वारा ही लोगों को करीब से जाना जा सकता है। कृष्णा सोबती ने गांव में बिताए हुए प्रत्येक पल को जीया और उसे अपनी रचनाओं में शीशे की तरह उतार कर रखा दिया। 'ज़िन्दगीनामा' पढ़ते हुए पाठक को ऐसा लगता है मानों वह पंजाब की धरती पर पहुँच गया हो और वहां के लोगों के साथ जी रहा हो। पंजाब के लोगों का सादा जीवन, सादा खानपान एवं रहन-सहन देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि पंजाब की धरती पर लोग कैसे मस्ती से जीवन यापन करते थे। वहां शहरी जीवन जैसी न तो कृत्रिमता थी और न ही कोई दिखावा था।

वेशभूषा से ही रहन-सहन की झलक वास्तविक रूप में प्रकट होती है। कृष्णा सोबती ने स्त्रियों और पुरूषों के पहनावे का यथार्थ चित्रण किया है। स्त्रियाँ सलवार, कुरता, ओढ़नी, फुम्मनवाले परांदे तथा पांव में पंजाबी जूती पहनती थी - ''माँ के फसलई जोड़े पर मूंगिया ओढ़नी--- सिर पर गुलजड़ा दुपट्टा था, पैरों में सलमें सितारे की जूती।''[2]

एक अन्य उदाहरण दृष्टव्य है - ''शाहनी ने टंगने पर पड़ी सूथन(सलवार) कर पहन ली, कुरते के बीड़े (बटन) लगाए। बाल सहेजे और घुस्से (ओढ़नी) की बुक्कल मारी और तप्ताए चित्त पोड़ियों से नीचे उतर आई।''[3] 'जिगरा की बात' कहानी में एक मध्यमवर्गीय युवक की वेशभूषा का भी चित्रण मिलता है - गाढ़े की चद्दर, चारखाना तहबन्द, कमाल जुलाहे का बुना धारीदार खेस और सरदारे का लम्बा-चौड़ा कुरता और देसी जूती।''[4]

इस प्रकार पुरूषों की वेशभूषा भी सादी थी। स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार के आभूषणों का प्रयोग करती थी, जिनमें बाँहों के जड़ाऊ, कड़े, गोखरू, मोती जड़ी मुंदरियाँ, आरसी नाक की, शिकारपुरी नथ, कानों के पीपल पत्ते, सिर पर चौक फूल आदि का वर्णन मिलता है।[5]

खानपान तथा वेशभूषा से किसी स्थान की संस्कृति को जाना जा सकता है। ज़िन्दगीनामा में दो वर्ग-उच्च एवं निम्नवर्ग का यथार्थ चित्रण किया गया है। शाहों का परिवार समृद्ध था। उनके खानपान में

Scanned with OKEN Scanner

दूध, घी, मक्खन, दही, बादाम, खीर आदि का प्रयोग होता था जबकि निम्न वर्ग मोटी रोटियों से ही गुजारा चलाता था।

कर्मदीन के शब्दों में - जट्ट जंटूओं को जरदेपुलाव नहीं चाहिए। उन्हें चाहिए मोटी-तगड़ी वज़नी रोटियाँ, और गला तरा करने को घी-शक्कर''[5] परन्तु गरीब लोगों को पेट भरने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। दिन-रात खेतों में काम करके वे अपना निर्वाह करते थे।

कृष्णा सोबती ने अपने कथा-साहित्य में सांस्कृतिक जीवन का भी यथार्थ चित्रण किया है। सभी लोग मिल जुल कर त्योहार, मेले, उत्सव आदि का आनन्द उठाते थे। हिंदू-मुस्लिम मिलकर एक दूसरे के त्योहारों को मनाते थे।

ईद का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था घरों में सेवइंयाँ बनाई जाती थी। ज़िन्दगीनामा उपन्यास में विविध प्रकार के मनोरंजन भी दिखाए गए हैं नटों के खेल द्वारा लोग मन बहलाते थे 'फुम्बी नटनी संतुलन बनाकर रस्सी पर चलती है।'[7] मिरासी लोग अपनी बातों से तथा विचित्र प्रकार के हाव-भावों से गांव के लोगों का मनोरंजन करते हैं। मुजरे इत्यादि भी किए जाते हैं। हुस्ना तथा बुद्धा नाच गाने द्वारा लोगों का मन बहलाती है।''[8] कहीं-कहीं कथा कीर्तन भी चलता रहता है।

पंजाब में मनाए जाने वाले त्योहारों में बैसाखी एवं लोहड़ी का विशेष महत्त्व है। वहां रहने वाले सभी जातियों के लोग मिलजुल कर इन त्योहारों को मनाते हैं। वैसाखी का चित्रण करते हुए गंडा सिंह कहता है - ''पार के साल की बात है, वैसाखी के मेले बजीराबाद जा पहुँचा। मेले में बड़ी रौनकें, कुश्ती सौंची, कोडियाँ-सारी राह रस्म मेलों की। माढ़ीवाल कपूल मिल गया। पहले तो खाई जलेबियाँ। ऊपर से तत्ता-तत्ता दूध, फिर तालीमवालियों के अभियानों की ओर निकल गए।[9] इसी प्रकार लोहड़ी का त्योहार भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सभी लोग लोहड़ी पर नए-नए वस्त्र एवं आभूषण पहनते हैं तथा एक-दूसरे को बधाइयाँ देते हैं। लोहड़ी के लिए बच्चे घर-धर जाकर पैसे माँगते हैं एक उदाहरण दृष्टव्य है - बस जातको, यह लो फल-फूल और खलासी करो। परन्तु बच्चे कैसे मानें - खलासी कैसी? हमें तो टके चाहिए, हमें तो पैसे चाहिए, हमें तो केले चाहिए।''[10]

''जैनी मेहरबान सिंह' नामक कृति में भी लोहड़ी के सुन्दर चित्र मिलते हैं। उदाहरणत: गांव में लोहड़ी के त्योहार की तैयारियां होने लगी। ईधन, उपलों के ढेर लगने लगे। घरों की लिपाई-पुताई हुई। मीठे के कड़ाह चढ़े। मकई फूलों की चंगेरें हंस-हंस गई और गुड़ शक्कर के छाज।''[11]

''अट्टारीवाल के चौंके में ऊँची लोहड़ी जली। ढोल बजे, भांगड़े पड़े। बहूटियों के चूड़े खनकते रहे और दिलवाले जवान गबरूओं के अरमान उछलते रहे। बजते ढ़ोलों की थाप पर अट्टारीवान के सरदारों ने सपरिवार आग की परिक्रमा की गगग बारी-बारी सबने मक्का के फूल डाले, तिल डाले और ऊँचे जयकारों के साथ अट्टारीवाल वालों ने खुशियाँ जाहिर की।''[12]

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में विभिन्न रीतिरिवाजों का वर्णन भी मिलता है। 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में पाशो को प्रभाती जोड़ मेले जाने के लिए कहा जाता है करवाचौथ का वर्णन भी मिलता है। हिन्दू परिवारों में मनाए जाने वाले विभिन्न रीतिरिवाजों का यथार्थ चित्रण किया गया है। किसी भी शुभ अवसर पर पान्दे या मौलवी बुलाए जाते हैं। 'ज़िन्दगीनामा' में जन्म उपनयन, विवाह आदि संस्कार भी मिलते है। 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में भी पुत्र होने पर उसका नामकरण संस्कार किया जाता है - मौसी गुसांई जी से कहती है - ''सीधी नज़र हो आपकी गुसांई जी, पोथी बांचकर नाम का शुभ अक्खर निकालिए।''[13]

इसी प्रकार कई स्थानों पर विवाह विषयक रीतिरिवाजों का भी यथार्थ चित्रण किया गया है - मिट्ठी का रिश्ता तय होने पर सबका गुड़ से मुँह मीठा करवाया जाता है, लड़के, लड़की के शरीर पर जौ, तेल, हल्दी आदि का उबटन लगाया जाता है। शगुन के तौर पर पुरोहित और नाई ही गरी छुआरा आदि लाते हैं, तभी रिश्ता पक्का माना जाता है।

यहाँ कृष्णा सोबती ने पंजाब में विवाह के अवसर पर होने वाले रीतिरिवाजों को चित्रित किया है। ज़िंदगीनामा उपन्यास तो पंजाब की संस्कृति को साकार रूप में उभार कर दिखाया है निम्न पंक्तियों में पंजाबी संस्कृति की पूर्ण झलक विद्यमान है -

गलबहियों - सी
उमड़ती - मचलती
दूध भरी छातियों - सी
चनाब और जेहलम की धरती
माँ बनी.....
भरे गौहरे चेहरो पर
गन्दम की इलाही लाली
बाँहों के चूड़े छनकाती
मक्का सी खिली-खिली
शरबती आँखो वाली
.....
अनोखे अलबेले पंजाब के
.....
तपे तन्दूरों पर झुकी
इलाही गंध भरी
घी-रची मोटी वज़नी रोटियां
पेड़े उठा, हथेली से लगाती
.....
मुँह अंधेरे उठ
बैलों को हल में जोत
हर खेत का रखवाला
सदियों खुले आसमान तले
गेहूँ की सुनहली फसलें उगाता रहा
.....
मिश्री से आब की
हर धड़कते दिल में
फड़कती बाँहों में
दरियाओं की मचलती लहरों में
.....
सजी बनी दुल्हन सी,
धरती पंजाब की
बैसाखी और लोहड़ी के
पाँव की थिरकन में
गिद्दे और भांगड़े पड़े
.....।।"[14]

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में पंजाब की संस्कृति का यथार्थ चित्रण किया है, जिसमें वहां रहने वाले लोगों के खानपान, वेशभूषा, तीज-त्योहार, मेले उत्सव, रीतिरिवाज, वहां की भाषा, बोली आदि का साकार चित्रण किया है। अत: यह कहा जा सकता है कि पंजाब की संस्कृति को उजागर करने में कृष्णा सोबती सिद्धहस्त हैं।

संदर्भ

1. कृष्णा सोबती : ''सोबती के सोहबत; पृ0 408
2. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 23
3. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 35
4. कृष्णा सोबती : 'बादलों के घेरे' (कहानीसंग्रह), पृ0 17
5. कृष्णा सोबती : 'डार से बिछुड़ी' पृ0 22
6. कृष्णा सोबती : 'बादलों के घेरे' (कहानीसंग्रह), पृ0 17
7. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 22
8. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 99
9. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 236
10. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 190-195
11. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 322
12. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 51-53
13. कृष्णा सोबती : ''जैनीमेहरबानसिंह; पृ0 61
14. कृष्णा सोबती : ''जैनीमेहरबानसिंह; पृ0 72
15. कृष्णा सोबती : ''डार से बिछुड़ी; पृ0 48
16. कृष्णा सोबती : ''ज़िन्दगीनामा; पृ0 9-14

Scanned with OKEN Scanner